Comparison and Competition, or Cooperation?	**तुलना, स्पर्धा या सहयोग**
-1-	–१–
Comparison Breeds Fear	तुलना भय की जननी है
One of the things that prevents the sense of being secure is comparison. When you are compared with somebody else in your studies or in your games or in your looks, you have a sense of anxiety, a sense of fear, a sense of uncertainty. So, as we were discussing yesterday with some of the teachers, it is very important to eliminate in our school this sense of comparison, this giving grades or marks, and ultimately the fear of examinations...	एक बात जो सुरक्षित होने के भाव में आड़े आती है वह है तुलना। जब आपकी तुलना किसी दूसरे से की जाती है––आपकी पढ़ाई के बारे में, आपके खेलकूद के बारे में अथवा आपके रूप या चेहरे के बारे में––तब आप व्यग्रता, घबराहट और अनिश्चितता के भाव से भर जाते हैं। इसलिए जैसा कि कल हम कुछ अध्यापकों के साथ चर्चा कर रहे थे, यह नितांत आवश्यक है कि हमारे विद्यालय में तुलना का यह एहसास, यह अंक या श्रेणी देना और सबसे बड़ा तो परीक्षा का भूत समाप्त किया जाए।
You study better when there is freedom, when there is happiness, when there is some interest. You all know that when you are playing games, when you are doing dramatics, when you are going out for walks, when you are looking at the river, when there is general happiness, good health, then you learn much more easily. But when there is fear of comparison, of grades, of examinations, you do not study or learn so well...	आप तब बेहतर अध्ययन कर पाते हैं जब स्वतंत्रता रहती है, जब प्रसन्नता रहती है, जब कुछ दिलचस्पी बनी रहती है। आप सब जानते हैं कि जब आप कोई खेल खेल रहे होते हैं, जब आप कोई नाट्य कार्यक्रम कर रहे होते हैं, जब चहलकदमी के लिए बाहर जाते हैं, जब आप किसी नदी को निहार रहे होते हैं, जब आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, खूब स्वस्थ रहते हैं तब आप कहीं अधिक सरलता से सीख लेते हैं। परंतु जब तुलना का, श्रेणी का, परीक्षा का भय सामने खड़ा हो, तब आप न उतना अच्छा सीख पाते हैं, न उतना अच्छा अध्ययन कर पाते हैं....
The teacher is concerned only that you should pass examinations and go to the next class, and your parents want you to get a class ahead. Neither of them is interested that you should leave the school as an intelligent human being without fear.	अध्यापक का तो इतना ही सरोकार रहता है कि आप परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाएं और अगली कक्षा में चले जाएं। और आपके अभिभावक चाहते हैं कि आप आगे–आगे जा पाएं। इनमें से किसी की भी इस बात में रुचि नहीं है कि आप विद्यालय से एक निर्भय प्रज्ञावान व्यक्ति बनकर निकलें।
-2-	–२–
Competition	स्पर्धा

Questioner: I would like not to be competitive, but how is one to exist without competing in this highly competitive society?	प्रश्नकर्ताः मैं स्पर्धात्मक बनना नहीं चाहूंगा परंतु इस घोर स्पर्धी समाज में बिना स्पर्धा में पड़े कोई अपना अस्तित्व कैसे बचाये रख सकता है?
Krishnamurti: You see, we take it for granted that we must live in this competing society, so there is a premise laid down, and from there we start. As long as you say, "I must live in this competing society," you will be competitive. This society is acquisitive; it worships success, and if you also want to be successful, naturally you must be competitive.	कृष्णमूर्तिः देखिए, यह बात हम मानकर चलते हैं कि हमें इस स्पर्धी समाज में रहना ही है, इसीलिए यह एक आधारवाक्य बन गया है और हम इसी से अपनी शुरुआत करते हैं। जब तक आप यह कहते रहेंगे, ''मुझे इस स्पर्धी-समाज में रहना है'', तब तक आप स्पर्धी ही बने रहेंगे। यह समाज अर्जनप्रिय है, सफलता का पूजक है और यदि आप सफल बनना चाहते हैं तो स्वाभाविक है कि आप को स्पर्धी रहना होगा।
But the problem is much deeper and more significant than mere competition. What lies behind the desire to compete? In every school we are taughat to compete, are we not? Competition is exemplified by the giving of marks, by comparing the dull boy with the clever boy, by endlessly pointing out that the poor boy may become the president or the head of General Motors—you know the whole business. Why do we lay so much stress on competition? What is the significance behind it? For one thing, competition implies discipline, does it not? You must control, you must conform, you must toe the line, you must be like all the others, only better, so you discipline yourself in order to succeed. Please follow this. Where there is the encouragement of competition, there must also be the process of disciplining the mind to a certain pattern of action, and is that not one of the ways of controlling the boy or the girl? If you want to become something, you must control, discipline, compete. We have been brought up on that, and we pass it on to our children. And yet we talk about giving the child freedom to find out, to discover!	परंतु समस्या केवल स्पर्धा से कहीं अधिक गहन-गंभीर है। स्पर्धा करने की इच्छा के पीछे क्या है? प्रत्येक विद्यालय में हमें स्पर्धी होना ही सिखाया जाता है, है न? अंक देकर, किसी मंद बालक की किसी कुशाग्र बालक से तुलना करके, लगातार इस ओर इशारा करके कि एक निर्धन बालक भी जनरल मोटर्स का अध्यक्ष या सर्वोच्च अधिकारी बन सकता है, या इसी तरह की अनेकानेक बातों द्वारा स्पर्धा हेतु उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं। हम स्पर्धा पर इतना बल क्यों देते हैं? इसकी सार्थकता क्या है? स्पर्धा में एक बात तो निश्चित है और वह यह कि इसमें अनुशासन ज़रूरी है, है न? आपको स्वयं पर नियंत्रण रखना होता है, आपको अनुकरण करना होता है, अनुदेशों का पालन करना होता है, आपको और सब लोगों जैसा होना होता है--बस और बेहतर। इस प्रकार आप सफल होने के लिए स्वयं को अनुशासित करते हैं। कृपया इसे समझिए। जब भी स्पर्धा को प्रोत्साहित किया जाता है, तब क्रियाकलापों के एक विशेष ढर्रे के अनुसार मन को अनुशासित करने की एक प्रक्रिया भी साथ-साथ अवश्य चलती है। क्या किसी लड़के या किसी लड़की को नियंत्रित करने के लिये अपनाये जा रहे तरीकों में से ही यह एक तरीका नहीं है? यदि आप कुछ बनना चाहते हैं, तो आपको नियंत्रण, अनुशासन और स्पर्धा--यह सब तो करना ही होता है। इसी में हम पले-बढ़े हैं और यही हम अपने बच्चों को विरासत में दे रहे हैं। और फिर भी हम बच्चों

	को खोजबीन करने की, अन्वेषण करने की, स्वतंत्रता देने की बात करते हैं!
Competition hides the state of one's own being. If you want to understand yourself, will you compete with another, will you compare yourself with anyone? Do you understand yourself through comparison? Do you understand anything through comparison, through judgment? Do you understand a painting by comparing it with another painting or only when your mind is completely aware of the picture without comparison?	स्पर्धा व्यक्ति के वास्तविक स्वरूप को ढांप देती है। यदि आप स्वयं को समझना चाहते हैं तो क्या आप किसी अन्य से स्पर्धा करेंगे? क्या आप किसी से अपनी तुलना करेंगे? तुलना द्वारा क्या आप स्वयं को समझ पाते हैं? क्या आप किसी भी चीज़ को तुलना द्वारा, निर्णयन या आकलन द्वारा समझ सकते हैं? क्या आप किसी चित्र को अन्य चित्र से तुलना करके समझ सकते हैं, या उसे आप केवल तभी समझ सकते हैं जब आपका मन बिना किसी तुलना के उसी चित्र को ध्यानपूर्वक देख रहा हो?
-3-	–३–
Competition Only Hides Fear of Failure	स्पर्धा केवल विफलता के भय को ढांपती है
You encourage the spirit of competition in your son because you want him to succeed where you have failed; you want to fulfill yourself through your son or through your country. You think that progress, evolution, lies through judgment, through comparison, but when do you compare, when do you compete? Only when you are uncertain of yourself, when you do not understand yourself, when there is fear in your heart. To understand oneself is to understand the whole process of life, and self-knowledge is the beginning of wisdom. But without self-knowledge, there is no understanding; there is only ignorance, and the perpetuation of ignorance is not growth.	आप अपने पुत्र में स्पर्धा की भावना भरते हैं क्योंकि आप उसे वहां सफल होते देखना चाहते हैं जहां आप विफल हो गये थे। आप अपने पुत्र या अपने राष्ट्र के माध्यम से अपनी तमन्ना पूरी करना चाहते हैं। आप सोचते हैं कि प्रगति और विकास तो तुलना और निर्णय पर आधारित होते हैं। परंतु, आप तुलना करते कब हैं? स्पर्धा करते कब हैं? केवल तब जब आप स्वयं अपने बारे में अनिश्चित होते हैं, जब आप स्वयं को ही नहीं समझ पाते हैं, जब आपके मन में भय भरा होता है। स्वयं को समझना संपूर्ण जीवन-प्रक्रिया को समझना है और आत्म परिचय प्रज्ञा का प्रभात है। परंतु आत्म परिचय के बिना समझ संभव नहीं हैं, संभव है केवल अज्ञान, और अज्ञान की निरंतरता के वर्धन को विकास नहीं कहा जा सकता।
-4-	–४–
Competition Is the Worship of an Outward Show	स्पर्धा बाहरी आडंबर की आराधना है
So, does it require competition to understand oneself? Must I compete with you in order to understand myself? And	तो स्वयं को समझने लिए क्या स्पर्धा की आवश्यकता है? मुझे स्वयं को समझने के लिए क्या आपसे स्पर्धा करनी होगी? फिर सफलता

why this worship of success? The man who is uncreative, who has nothing in himself—it is he who is always reaching out, hoping to gain, hoping to become something, and as most of us are inwardly poor, inwardly poverty-stricken, we compete in order to become outwardly rich. The outward show of comfort, of position, of authority, of power, dazzles us because that is what we want.	की इतनी पूजा क्यों? जो व्यक्ति रचनात्मक नहीं है जो स्वयं में कुछ नहीं है--केवल ऐसा ही व्यक्ति कहीं पहुंचना चाहता है--कुछ पाने की आकांक्षा में, कुछ बनने की आशा में, और चूंकि हम में से अधिकतर लोग भीतर से विपन्न हैं, दरिद्र हैं, अतः बाहरी तौर से संपन्न होने के लिये स्पर्धा करते हैं। सुख-सुविधाओं का, पद-प्रतिष्ठा का, अधिकार प्राप्ति का, शक्तिसंपन्नता का बाहरी आडंबर हमें चकित-भ्रमित कर देता है क्योंकि यही सब कुछ तो हम चाहते हैं।
-5-	-५-
Cooperation Is the Absence of Self-Centeredness	सहयोग अहंकेंद्रितता की अनुपस्थिति का परिणाम है
There can be cooperation only when you and I are as nothing. Find out what it means, think it out and meditate about it. Don't just ask questions. What does that state of nothingness mean? What do you mean by it? We only know the state of activity of the self, the self-centered activity...	सहयोग तभी संभव हो पाता है जब आप और मैं मानो कुछ न हों। इसका अर्थ समझने का प्रयत्न कीजिये--इस बारे में सोचिए, इस पर ध्यान दीजिए। केवल प्रश्न ही मत करने लगिए। यह 'कुछ-नहीं-पन' की अवस्था कौन सी है? इससे आपका तात्पर्य क्या है? हम तो केवल अहं की गतिविधि को, अहंकेंद्रित गतिविधि को ही पहचानते हैं न...
So, we know that there cannot be fundamental cooperation though there may be superficial persuasion through fear, through reward, through punishment, and so on—which is not cooperation obviously.	तो हम जानते हैं कि भय, पुरस्कार और दंड इत्यादि के माध्यम से असली सहयोग संभव नहीं है, हांलाकि इन तरीकों से सतही तौर पर प्रेरित किया जा सकता है, परंतु वह ढंग वास्तविक सहकारिता नहीं लाता।
So, where there is activity of the self as the end in view, as the Utopia in view—that is nothing but destruction, separation, and there is no cooperation. What is one to do if one is really desirous, or one wants really to find out, not superficially but really, and bring about cooperation? If you want cooperation from your wife, your child, or your neighbor, how do you set about it? You set about by loving the person. Obviously!	तो, नज़र में किसी लक्ष्य को रखकर, किसी आदर्श को रखकर किये जा रहे कार्यकलाप विनाश और विभाजन के अतिरिक्त कुछ नहीं करते--वहां सहयोग जैसा कुछ नहीं होता। आप यदि सहयोग की भावना लाने के इच्छुक हैं--दिखाने के लिये नहीं, बल्कि वास्तव में यदि आप सहयोग की भावना लाना चाहते हैं, तो आपको क्या करना होगा? यदि आप अपनी पत्नी से सहयोग चाहते हैं, अपने बच्चों, अपने पड़ोसियों से सहयोग चाहते हैं तो इसके लिये आप क्या करना शुरू करें? साफ बात है कि आप उस व्यक्ति से प्रेम करना शुरू करें!

Love is not a thing of the mind; love is not an idea. Love can be only when the activity of the self has ceased to be. But you call the activity of the self positive; that positive act leads to destruction, separativeness/ misery, confusion, all of which you know so well and so thoroughly. And yet, we all talk of cooperation, brotherhood. Basically, we want to cling to our activities of the self.	प्रेम मन की, बुद्धि की उपज नहीं है, न ही यह कोई धारणा, कोई विचार है। प्रेम तभी संभव है जब अहं की तमाम गतिविधियों का अवसान हो गया हो। परंतु आप अहं की गतिविधि को सकारात्मक मानते हैं और यही बात हमें विनाश, विभाजन, विपत्ति और विभ्रम की ओर ले जाती है--इस सब से आप भली-भांति अवगत ही हैं--परंतु फिर भी हम सहकारिता और भाईचारे की बात करते हैं। बुनियादी तौर पर, हम अपने अहं से जुड़े कार्य-कलापों से चिपके रहना चाहते हैं।
-6-	-६-
Is It All about Me—or Us?	मैं या हम?
So, a man who really wants to pursue and find out the truth of cooperation must inevitably bring to an end the self-centered activity. When you and I are not self-centered, we love each other; then you and I are interested in action, and not in the result, not in the idea but in doing the action; you and I have love for each other. When my self-centered activity clashes with your self-centered activity then we project an idea towards which we both quarrel; superficially we are cooperating, but we are at each other's throats all the time.	तो, जो वास्तव में सहयोग की सच्चाई खोजना-तलाशना चाहता हो उसे अपरिहार्य रूप से अपने अहं-केंद्रित कार्य कलाप बंद कर देने होंगे। जब आप और मैं अहं-केंद्रित नहीं रहेंगे तब एक दूसरे से प्रेम करेंगे, तब आप और मैं फल में रुचि न रखकर कार्य में रुचि रखेंगे, तब आप और मैं एक दूजे के प्रति मन में प्रेम रखेंगे। जब मेरी अहं-केंद्रित गतिविधि आपकी अहं-केंद्रित गतिविधि से टकराती है तब हम दोनों कोई धारणा बना लेते हैं और उस धारणा की ओर बढ़ते हुए हम लड़ने लगते हैं। बाहरी तौर पर हम भले ही सहयोग करें, परंतु भीतर-भीतर हम एक दूसरे का गला काटने के लिये कटिबद्ध रहते हैं।
So, to be nothing is not the conscious state, and when you and I love each other, we cooperate, not to do something about which we have an idea, but in whatever there is to be done.	न-कुछ होना चेतन अवस्था नहीं होती, और जब आप और मैं एक दूसरे से प्रेम करते हैं तब हम सहयोग करने लगते हैं, अपनी बनायी हुई धारणा पर आधारित किसी कार्य में ही नहीं, अपितु जो कुछ भी करने के लिए हमारे समक्ष हो उसी में।
If you and I loved each other, do you think the dirty,filthy villages would exist? We would act; we would not theorize and would not talk about brotherhood. Obviously, there is no warmth or sustenance in our hearts, and we talk about everything; we have methods, systems, parties, governments, and	यदि हम एक दूसरे से प्रेम करते, तो क्या आप सोचते हैं कि गंदगी और कूड़ा-कचरा भरे गांवों का अस्तित्व होता? हम कुछ करते। हम व्याख्याओं और भाईचारे की बातों में ही नहीं खोये रहते। स्पष्ट है कि हमारे हृदय में कोई गरमाहट, कोई पोषण नहीं है, फिर भी हम दुनिया भर की तमाम बातें करते रहते हैं। हमारे पास पद्धतियां हैं, प्रणालियां हैं, पार्टियां,

legislations. We do not know that words cannot capture that state of love.	सरकारें और विधायिकाएं हैं। हम यह जानते ही नहीं कि प्रेम की अवस्था शब्दों की पहुंच से परे है।
The word love is not love. The word love is only the symbol, and it can never be the real. So, don't be mesmerized by that word love.	'प्रेम' शब्द प्रेम नहीं है। यह शब्द तो प्रतीक मात्र है अतः यह यथार्थ नहीं हो सकता। तो इस 'प्रेम' शब्द से ही सम्मोहित होकर न रह जाइए।
-7-	–७–
Know when Not to Cooperate	जानिए कि सहयोग कब नहीं करना है
When you know how to cooperate because there is this inward revolution, then you will also know when not to cooperate, which is really very important, perhaps more important. We now cooperate with any person who offers a reform, a change, which only perpetuates conflict and misery: but if we can know what it is to have the spirit of cooperation that comes into being with the understanding of the total process of the self, then there is a possibility of creating a new civilization, a totally different world in which there is no acquisitiveness, no envy, no comparison. This is not a theoretical utopia but the actual state of mind that is constantly inquiring and pursuing that which is true and blessed.	अपने भीतर इस क्रांति के चलते जब आप यह जान लें कि सहयोग कैसे किया जाए, तब आप यह भी जान पाएंगे कि सहयोग कब नहीं देना है। यह वास्तव में बहुत महत्त्वपूर्ण है––शायद और भी अधिक महत्त्वपूर्ण। आज हम हर उस व्यक्ति को सहयोग दे देते हैं जो कोई सुधार या परिवर्तन लेकर आता है, भले ही वह द्वंद्व और दुख को ही आगे बढ़ाता हो। परंतु यदि हम यह जान सकें कि यह सहयोग की भावना रखना होता क्या है जो अहं की, स्व की संपूर्ण प्रक्रिया को समझने के साथ–साथ आती है, तभी यह संभावना बनती है कि हम एक नयी सभ्यता, एक बिल्कुल भिन्न संसार की रचना कर पाएं, जिसमें न स्वामित्वभाव हो, न ईर्ष्या और न तुलना। यह कोई कोरी सैद्धांतिक कपोल–कल्पना नहीं है, अपितु यह उस मन की वास्तविक अवस्था है जो अनवरत उसकी तलाश में रहता है जो सत्य है, आशिष है।
CHAPTER THREE	**अध्याय तीन**
Work: How Do You Decide?	**कार्य : आप निर्धारित कैसे करते हैं?**
-1-	–१–
Your Life Must Not Destroy Another	आपका जीवन दूसरों के लिए तबाही न हो
Don't you want to find out if it is possible to live in this world richly, fully, happily, creatively without the destructive drive of ambition, without competition? Don't you want to know how to live so that your life will not destroy another or cast a shadow	क्या आप यह जान लेना नहीं चाहेंगे कि इस संसार में महत्त्वाकांक्षा के विध्वंसक संवेग के बिना और प्रतिस्पर्धा के बिना भी क्या उत्कृष्टतापूर्वक, सुखपूर्वक और सर्जनात्मक जीवन जीना संभव है। क्या आप नहीं जानना चाहेंगे कि आप कैसे जिएं ताकि आपका जीवन